॥ श्री ॥

# पार्श्वपुराण

PAARSHVAPURAANA

**पद्मकीर्ति** · १०वीं शती · अभिलेख ७८/९०

श्री जिनसेन → पद्मकीर्ति

## संक्षिप्त परिचय

कवि पद्मकीर्ति कृत — तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चरित; अपभ्रंश 'पासणाहचरिउ' के रूप में प्रसिद्ध रचना।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

## अभिलेख-विवरण

पार्श्वपुराण — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ७८ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता पद्मकीर्ति; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २५७) के अनुसार इनका समय १०७७ है तथा गुरु श्री जिनसेन। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "पासणाह चरिउ" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, प्रद्युम्नचरित, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित · प्रद्युम्नचरित · गद्यचिन्तामणि · क्षत्रचूड़ामणि · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ७८ — मूल छायाचित्र

← नेमिनाथपुराण

शांतिपुराण →